बाल साहित्यः इधर के दृश्य

पल्लव

हिंदी में बच्चों की पत्रिकाएं इतनी सी हैं कि आप उनके नाम भी याद रख सकें। फिर उनमें भी पठनीय और दृष्टिसंपन्न पत्रिकाओं की संख्या दो-तीन से आगे नहीं बढ़ पाती। ऐसे में एक नई पत्रिका का आगमन सुखद है और जब यह जानकारी हो कि इसे सोच समझकर, बच्चों में भी खास आयु वर्ग के लिए निकाला जा रहा है तो सुख बढ़ जाता है। चकमक के संपादन से प्रसिद्ध हुए सुशील शुक्ल के संपादन में नई पत्रिका 'प्लूटो' का आगमन हुआ है। तापोशी घोषाल इसकी डिजाइनर (कला संपादक) हैं और उनकी यह टीम पत्रिका को बेहद प्राणवान बनाती है। बाल साहित्य में वास्तविक रुचि- गति रखने वाले लोगों से लिखवाना, फिर एक-एक रचना का कायदे से चयन करना, फिर उनको पढ़कर सुरुचिपूर्ण चित्र बनाना- यह परिश्रम और दृष्टि इस पत्रिका में दिखाई देती है। जिस अभाव की चर्चा हिंदी बाल साहित्य का स्थाई भाव है 'प्लूटो' उसका कायदे से किया गया प्रत्याख्यान है। पत्रिका के पहले अंक में प्रयाग शुक्ल और नरेश सक्सेना की कविताएं, प्रभात की कहानी, जगदीश जोशी की चित्र पहेली और पिछली पीढ़ी के निरंकारदेव सेवक की कविता के साथ कुछ अनाम सामग्री भी है। प्रभात की कहानी 'कुतुबमीनार का पेड' को पढ़ना रोचक अनुभव है। एक कौवे ने कुतुबमीनार देखी और वह उसे साइकिल के पीछे बांध जंगल में ले गया। पाठकों को अरुंधति राय का प्रसिद्ध निबंध याद होगा 'कल्पना का अंत'- यह कहानी कल्पनाशीलता का नया आयाम है। यह वह सृजनात्मक कल्पनाशीलता है जो बच्चे को असंभव सोचने को उत्साहित करे। दूसरे अंक में विनता विश्वनाथन की रचनाएं हैं और अंक अधिकांशतः प्रकृति से संबंधित रचनाओं से भरा है। पशु, पक्षी, पेड़, जंगल, चूहे और बच्चे। विचारणीय है कि जिस दौर में हमारा नागरिक जीवन इस स्थिति में आ गया है कि कांटेदार पौधे/पेड़ की सामान्य जानकारी 'कौन बनेगा करोड़पति' में हजारों का सवाल बन जाए तब प्रकृति से दूर होने की विडम्बना साफ-साफ दिखाई देती है। विनता विश्वनाथन की रचनाएं 'चींटी की झपकी' और 'मिट्टी के रंग' जहां प्रकृति के विभिन्न रूपों से पाठकों को जोड़ती है वहीं 'खोखल में दो महीने' जैसी सूचना प्रधान रचना और 'चांद' शंखला की चित्र रचना भी अंक की उपलब्धि है। इस अंक में शाशि सबलोक की कहानी 'आंख खुली तो सपना गिर गया' और अनाम रचनाएं 'निडर चूहे' और 'निमरा का बस्ता' भी पठनीय है। संपादक सुशील शुक्ल की कविता 'खट और पट' तथा संस्मरण 'रहमत दादा का झोला' रंगों में इजाफा करते हैं। सामुदायिकता और सह जीवन की ऊर्जा से भरी ये रचनाएं सचमुच बढ़िया हैं। ये बच्चों को उपदेशात्मकता के अवगुण से बचती हैं और अपनी सहजता-रम्यता में पाठक को सराबोर करने की शक्ति से संपन्न हैं। पत्रिका का तीसरा अंक भी विविधवर्णी रचनाओं से संपन्न है किन्तु यहां अनाम रचनाकारों की रचनाओं की भरमार है। प्रभात की कहानी 'पिंकू के पापा' दिलचस्प है और बच्चों के बारे में धारणाएं बनाने से टोकती है। एक और रचना 'आवाज' के रचनाकार का नाम नहीं है किन्तु यह रचना प्रकृति और परिवेश के संबंध में गहराई से मनुष्य के रिश्ते को बताती है। चीजों को देखना और महसूस करना हम जानते

हैं लेकिन जानकारी को हार्दिक ढंग से यह रचना बताती है। चन्दन यादव की कविता 'सुन भाई ऊंट' और अनाम कवि की 'गाय ओ गाय' लीक से हटकर लिखी गई कविताएं हैं। अंतिम आवरण पर छपी राजशेखर की कविता तो उद्धृत ही कर देनी चाहिए -

अदम बदम अदम बदम
चलो चलें कदम कदम
रात के हम टिम टिम टिम
भोर के हम चम चम चम
खर खर खरगोश हम
टिपिर टिपिर ओस हम
खेत खूत खात बोले
पटर पटर पात बोले
माटी के कुइयां मुइयां
जंगल के हइया हुइया
कुइयां मुइयां हइया हुइया
कुइयां मुइयां हइया हुइया कुइयां मुइयां हम

प्लूटो का पताः नॉलेज सेंटर सी-404 बेसमेंट डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
वार्षिक सदस्यताः 360 रुपये (साधारण डाक), 425 रुपये (पंजीकृत डाक)

पत्रिका का चौथा अंक भिन्न-भिन्न आस्वादपरक रचनाओं से बना है जिसमें वरिष्ठ रचनाकारों से लगाकर नवोदित लोग शामिल हैं। सत्यू की कहानी 'अनारको के सवाल' दिलचस्प कहानी है और यह वह कहानी है जो सबको पढ़नी चाहिए। अनारको के सवाल हैं- 'सब चीजें कौन तय करता है? हमारी परीक्षा होगी ये कौन तय करता है? पापा छह दिन काम करेंगे और एक दिन छुट्टी होगी ये कौन तय करता है? और अम्मी तुम सातों दिन काम करोगी ये कौन तय करता है?' बताएं! हैं जवाब? मजेदार बात है अनारको कक्षा चार में पढ़ती है और उसके सवाल अनंत हैं लेकिन हमारी व्यवस्था जिसमें परिवार, स्कूल और समाज सब कोई शामिल हैं उसके इन सवालों के जवाब देने में कोई रुचि नहीं लेती। इस अंक में प्रतिभाशाली फिल्मकार वरुण ग्रोवर के मुक्तक हैं। शीर्षक है - 'तीन तिगाड़े'

माचिस गिल्ली
सूखी तिल्ली
बरसा शिमला
बह गई दिल्ली

कूद कुदाई
चिरी उराई
चैन्नई से
लेकर मदुराई

चोरी चोरी
चटनी चटना
खट्टी रांची
मीठा पटना

छोटे बच्चों (लगभग सात, आठ, दस साल तक के) को ध्यान में रखकर निकाली गई यह द्वैमासिक पत्रिका बेहद प्राणवान है और इसका स्वागत होना चाहिए। लगभग तीस रंगीन पृष्ठों की इस पत्रिका का दाम 50 रुपये ज्यादा लग सकता है किन्तु जब तक ऐसे प्रयास व्यावसायिक ढंग से नहीं किए जाएंगे तब तक कुछ संभ्रांत समूहों के मध्य सिमटे रहने को अभिशप्त होंगे। क्या ही अच्छा हो कि इस तरह की पत्रिकाओं का खूब प्रचार-प्रसार हो और सचमुच उन पाठकों तक पहुंचे जिनके लिए इनका निर्माण हुआ है।

बच्चों के बाबा

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का भारतीय जन-जीवन पर असर कितना महत्त्वपूर्ण है यह कहने की बात नहीं। उनसे सहमत-असहमत होना संभव है किन्तु उनकी अनदेखी असंभव है। ऐसे व्यक्तित्व पर बच्चों के लिए कोई किताब ध्यान में आती है? गांधी, नेहरू, भगत सिंह और यहां तक सावरकर पर बच्चों के लिए किताबें उपलब्ध हैं किन्तु बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर पर हिंदी में शायद ही कोई किताब हो जिसे स्तरीय कहा जा सके। एकलव्य से प्रकाशित श्री विद्या नटराजन और एस. आनंद की कथा तथा दुर्गाबाई व्याम और सुभाष व्याम के चित्रों से सजी इस किताब को पढ़ना भारतीय सामाजिक आंदोलन से आत्मीय परिचय करने जैसा है। यह इसलिए भी आवश्यक है कि बच्चा ऐसे विचारकों के बारे में सही परिप्रेक्ष्य से विचार तो कर सके। उसके निर्णयों और मतों का आधार पूर्वाग्रह और घृणा न हो। मूलतः अंग्रेजी में लिखी इस किताब को सरल-सहज हिंदी में टुलटुल विश्वास ने तैयार किया है। 'भीमायन' शीर्षक की यह किताब एक रोचक और बहुप्रचलित बहस से शुरू होती है जिसमें एक तथाकथित सवर्ण युवक एक युवती से बहस कर रहा है कि भारत में अब कहां छुआछूत है? आरक्षण की कोई जरूरत नहीं। इत्यादि। इस बहस से भीमराव रामजी अम्बेडकर की कहानी शुरू होती है जिसे दुर्गाबाई व्याम और सुभाष व्याम ने गोंड शैली के अद्‌भुत चित्रों से सजाया-बनाया-बढ़ाया है। पुस्तक में अम्बेडकर के बचपन, जीवन संघर्ष, तत्कालीन भारतीय समाज के अनेक चित्र हैं तो साथ-साथ बीते दशक के वे ताजा समाचार पत्र कतरनें भी हैं जिनमें वर्तमान छुआछूत, भेदभाव और जातीय उत्पीड़न-हिंसा की खबरें हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में प्रसंग है स्कूल में पढ़ रहे बालक भीम की प्यास का। उसे पानी नहीं मिलता। पंक्तियां देखिए -

कुएं पर बच्चे और हौद पर जानवर,
पेट फूटने तक पी सकते हैं पानी।
पर तब गांव रेगिस्तान बन जाता है
जब प्यास बुझाना चाहूं अपनी।

जाति की क्रूरता एक भयावह सच्चाई है जिसे झुठलाना व्यर्थ है। बालक भीम के अनुभव उसे न्यायसंगत और समतापूर्ण संविधान लिखने की तरफ ले गए। किताब में यह अच्छा प्रयोग है कि बालक भीम के साथ हुई क्रूरताओं के समानांतर आज की घटनाओं की कतरनें दे दी गई हैं जो इस भ्रम को धोने में मदद करती हैं कि अब कहां है अस्पृश्यता? अब

आरक्षण की जरूरत क्या है? इस बात को समझना आवश्यक है आरक्षण पर हम हजार बहस करें लेकिन हमारे समाज में व्याप्त ऊंच-नीच की दुर्भावना से लड़े बगैर हमारा विकास नहीं हो सकता। किताब में बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रसंग आए हैं जैसे महाड़ सत्याग्रह। महाड़ सत्याग्रह से ही यह संभव हुआ था कि सार्वजनिक जल- स्रोतों जैसे कुओं, हौद से दलितों को पानी पीने - लेने की स्वीकृति मिल सकी। क्रूर और दुखद सचाई थी कि महाराष्ट्र के चवडार हौज से हिंदुओं के साथ किसी भी धार्मिक मतावलम्बी को पानी लेने की इजाजत थी यही नहीं उनके पालतू पशु-पक्षी भी यहां आकर पानी पी सकते थे लेकिन तथाकथित अछूतों को इस हौज के पानी को छूने की अनुमति नहीं थी। महाड़ सत्याग्रह ने यह अन्याय समाप्त किया। लेकिन क्या अन्याय मिट गया? इसी के समानांतर 6 जून 2008 की भोपाल की खबर किताब में छपी है जिसके अनुसार हरदा के एक कंटाड़ा गांव में दलित प्रेमबाई को गांव के सार्वजनिक हैण्ड पम्प से पानी भरने के कारण जला दिया गया। कहना न होगा कि बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन संघर्ष को जानना उनसे परिचित होना है। बहुत बड़े बौद्धिक और सिद्धांतकार अम्बेडकर से नई पीढ़ी का यह परिचय आवश्यक है। अपरिचय कटुता और बहुधा घृणा को जन्म देता है और घृणा से कोई समाज आगे नहीं बढ़ सकता। आइए देश को आगे बढ़ाने के लिए अम्बेडकर जैसे सामाजिक नेता और बौद्धिक को ठीक से जानने की शुरुआत करें।

पुस्तकः 'भीमायन'
लेखकः श्री विद्या नटराजन और एस. आनंद
प्रकाशकः एकलव्य, ई -10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल
मूल्यः 210 रुपये

पीऊ की बात

सोरित गुप्तो को मैं नहीं जानता। भारत में बाल साहित्य के अग्रणी प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट (अब राष्ट्रीय पुस्तक न्यास) की किताबों का एक प्रमुख अवगुण यह है कि उनमें परिचय नहीं दिया जाता। सोरित गुप्तो की इस किताब की सुन्दर बात है - बच्चे का सपना। बारिश का मौसम है और पीऊ भीग गई है। मां ने उसे जबरदस्ती बिस्तर में सुला दिया। उसे नींद आ गई। नींद में सपना। सपना यह कि उसे एक पेन्सिल बॉक्स मिला। पेंसिलें उससे बात कर रही हैं। पेंसिलें इतनी जादुई हैं कि बादल बनाएं तो बरसात होने लगे। रबर ऐसा कि चले तो बादल मिटा दे। बस इतनी-सी बात। लेकिन क्या बात इतनी-सी है? क्या यह प्रकृति पर मनुष्य की विजय का सपना है? या कहीं यह सृजन का सपना तो नहीं है? हम अपने हाथ से बादल बनाएं। खेत में फसल उगाएं। सच्ची सृजनशीलता का सपना। किताब में कहानी के साथ सुन्दर चित्र चलते हैं जिन्हें खुद सोरित गुप्तो ने बनाया है। पांच से आठ साल के बच्चों के लिए यह किताब सपने के मार्फत नव निर्माण के अहसास की कवायद है। शाइर ने ऐसे ही नहीं कहा था- बच्चों के नन्हें हाथों को चांद सितारे छूने दो। चार किताबें पढ़कर ये भी हम जैसे हो जाएंगे। ◆

पुस्तकः 'पीऊ और उसके जादुई दोस्त'
कहानी और चित्र : सोरित गुप्तो
प्रकाशकः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत नेहरू भवन, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
मूल्यः 30 रुपये

लेखक परिचयः लगभग एक दशक से हिन्दी साहित्य का अध्यापन, हिन्दी की लघु पत्रिका 'बनास जन' के संपादक। संप्रतिः हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्राध्यापक हैं।

संपर्क : 8130072004; pallavkidak@gmail.com